Western Philosophy -Descartes

मन तथा शरीर का सम्बन्ध

RELATION BETWEEN MIND AND BODY

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

यूरोप के पुनर्जागरण के युग में जो वैज्ञानिक प्रगति हुई उसका प्रभाव मनोविज्ञान, दर्शन आदि पर भी बहुत पड़ा । पाश्चात्य जगत में जड़ और चेतन के संबंध को लेकर काफी मतभेद रहे हैं ।सभी ने अपने -अपने ढंग से इस समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है ।इस संबंध में डेकार्ट के द्वारा जो मत दिए गए हैं, उनका अध्ययन यहाँ किया जायेगा ।

डेकार्ट ने आत्मा की धारणा को नए सिरे से प्रस्तुत किया है ।पूर्व कालीन दर्शनिकों ने आत्मा और शरीर को एक ही तत्व के दो पहलुओं के रूप में स्वीकार किया था परंतु देकार्त ने आत्मा को शरीर से भिन्न माना और द्वैतवाद की स्थापना ।डेकार्ट का मूल तत्व द्रव्य है जिसे अपने अस्तित्व के लिए किसी अन्य सत्ता पर निर्भर नहीं करना पड़ता ,यह निरपेक्ष है ।इसी पर सारा विश्व आधारित है ।उन्होंने मूल सत्ता ईश्वर को माना है। डेकार्ट के द्रव्य दो अर्थों में लिया गया है - प्राथमिक और गौण। प्राथमिक अर्थ में द्रव्य केवल ईश्वर को मानते हैं और गौण अर्थ में मन और शरीर को डेकार्ट ने द्रव्य माना है

मन और शरीर के गुणों को बतलाते हुए डेकार्ट ने कहा है कि शरीर भौतिक गुणों का विस्तार है और आत्मा चेतन तत्व है। यह दोनों पदार्थ परस्पर स्वतंत्र हैं शरीर न मन पर आश्रित है और न मन शरीर पर आश्रित है पर दोनों ईश्वर पर आश्रित हैं । डेकार्ट ने मन और शरीर को एक दूसरे से भिन्न सत्ता माना है ।इस प्रकार मन और शरीर को द्वैत मानने के कारण डेकार्ट द्वैतवादी बन जाते हैं और दोनों सत्ता को अलग-अलग दर्शाते हैं । परंतु जब विश्व की ओर दृष्टिपात किया जाता है तब यह देखा जाता है कि हमारे मन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है और शरीर की दुर्बलता का प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है ,अतः हमारा अनुभव बतलाता है कि दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं और दोनों के बीच विभेदक रेखा नहीं खींचा जा सकता है ।डेकार्ट ने भी इस कठिनाई का अनुभव किया और इस संबंध की व्याख्या के लिए उन्होंने अन्तःक्रियावाद(Interactionism) की सहायता ली तो कहीं पर समानांतरवाद(Parallelism)की भी सहायता ली है ।जब वे शारीरिक क्रियाओं की व्याख्या योगिक नियमों के आधार पर करते हैं और मानसिक क्रियाओं की व्याख्या आरंभिक

नियमों के आधार पर करते हैं तो इनके दर्शन में समानांतरवाद की झलक दिख पड़ती है । समानांतरवाद के अनुसार मन और शरीर दोनों अलग-अलग हैं और जब वे गौण गुण की व्याख्या करते हैं तब वे अंतःक्रियावाद का सहारा लेते हैं। इन गुणों का स्पष्टीकरण मानव शरीर के मध्य पीनियलग्लैंड (Pineal Gland)की सहायता से करते हैं ।पीनियल ग्लैंड हमारे मस्तिष्क में पाई जाने वाली एक सूक्ष्म वस्तु है जिसके द्वारा ही मन शरीर को प्रभावित करती है और स्वयं शरीर इससे प्रभावित होता है ।डेकार्ट के इसी मत को अंतःक्रियावाद कहा जाता है ।

डेकार्ट ने यह भी बतलाया है की पीनियल ग्लैंड क्या है ? अर्थात यह भौतिक(Physical) है या अभौतिक(Non-physical) है अगर इसे भी भौतिक मान लेते हैं तो यह नहीं कह सकते की इसके द्वारा मन और शरीर के बीच संबंधित स्थापित हो जाता है और यदि इसे अभौतिक मानते हैं तो उन्हें यह बताना पड़ेगा कि मन और शरीर का प्रभाव क्यों एक दूसरे पर पड़ता है क्योंकि दोनों एक दूसरे से अलग है ।अतः डेकार्ट ने विश्व को इस तरह से दो विरोधी भागों में बांट दिया कि फिर से दोनों में किसी प्रकार का संबंध स्थापित नहीं हो सका क्योंकि कभी वे समनान्तरवाद का सहारा लेते हैं और कभी अन्तःक्रियावाद।

डेकार्ट ने पशु और मनुष्य के व्यवहार में भिन्नता दिखाइ और पशुओं में आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार किया और पशु के व्यवहार को यांत्रिक बतलाया पशु ज्ञानेंद्रियों से संवेदना प्राप्त करता है और इससे ही उसमें गति उत्पन्न होती है ।

डेकार्ट ने मनुष्य के शरीर को भी यंत्रवत माना है। एक मशीन में उसका प्रत्येक अंग क्रियाशील होता है अतः नाड़ी -मंडल ,मांसपेशियां तथा ग्रंथियों से युक्त एक मशीन के रूप में शरीर की व्याख्या की है फिर उन्होंने इसकी क्रिया की व्याख्या करते हुए कहा है कि, मस्तिष्क और इंद्रियों का संबंध कुछ शिराओं से है जिसमें एक विशेष प्रकार का द्रव्य रहता है बाह्य विषयों से संबंधित होने पर इस द्रव्य में गति उत्पन्न हो जाती है और रक्त के सहारे संपूर्ण शरीर में फैल जाती है और यह गति जब मस्तिष्क में पहुंचती है तो इस क्रिया के फल स्वरुप प्रतिक्रिया होती है और गति मस्तिष्क से पीछे की ओर मुड़ जाती है और तब मांसपेशियां क्रियाशील हो जाती हैं। इस प्रकार डेकार्ट ने पशु और मनुष्य दोनों को ही यांत्रिक माना है और दोनों में इतना अंतर है कि मनुष्य में आत्मा भी है । इच्छापूर्ण क्रियाएं आत्मा के साथ होती हैं और अनैक्षिक क्रियाएँ प्रतिवर्त क्रियाओं के द्वारा होती हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि जीव किसी क्रिया को कैसे करता है? वाह्य विषयों का ज्ञानेंद्रियों पर प्रभाव पड़ता है, तन्तुओं से यह प्रभाव मस्तिष्क पर पहुंचता है फल स्वरुप प्रतिक्रिया होती है और जीव कार्य करता है। इस प्रकार शरीर एक मशीन की भांति कार्य

करता है। जिस प्रकार बिजली के स्विच को ऑन कर देने पर मशीन क्रियाशील हो जाती है उसी प्रकार इंदिरायानुभव होने पर जीव क्रियाशील हो जाता है ।आंख में तिनका पड़ जाने पर हमारा हाथ तुरंत वहां पहुंच जाता है इस प्रतिवर्त क्रिया के आधार पर ही डेकार्ट ने जीव में मानसिक और शारीरिक क्रियाओं का यांत्रिक नियमों के आधार पर समझने का प्रयास किया है परंतु उस में प्रतिवर्त क्रिया को ही सब कुछ नहीं माना है ,उसने मनुष्य के व्यवहार में आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार कर उसे दो भागों में विभाजित किया है -यांत्रिक (Mechanical)और विवेकपूर्ण(Rational) ।बौद्धिक कार्यों को भौतिक कार्य से भिन्न माना है ,एक में निर्णय भाव और संकल्प वृत्ति होते हैं तो दूसरे में पूर्व सोच या उद्देश्य कार्य नहीं होता है।

डेकार्ट के इस सिद्धांत में पशु और उच्च कोटि के जीवो के व्यवहार में अंतर उत्पन्न कर दिया , इतना होते हुए भी उसने भौतिक विज्ञान के नियमों के आधार पर नियंत्रणवाद (Determinism) को महत्व दिया है।इन्होनें ज्ञानेंद्रियों को दो रूपों में विभाजित कर एक नई धारणा उपस्थित की है ,उनके अनुसार ज्ञानेंद्रियां का दो रूप हैं - बाह्य (External)और आंतरिक(Internal) बाह्य ज्ञानेंद्रियां जिनका कार्य -स्पर्श (त्वचा), घ्राण(नाक), स्वाद (जिह्वा),श्रवण(कान) और दृष्टि (आँख)से संवेदना ग्रहण कराना है लेकिन संवेदना के लिए बाह्य ज्ञानेन्द्रियाँ केवल माध्यम रूप में हैं ।

इस प्रकार हम हम देखते हैं कि मन और शरीर की संबंध को सुलझा नहीं पाते हैं क्योंकि इन्होंने पीनियल ग्लैंड के स्वरूप को नहीं सुलझाया और उसके संबंध में मनगढ़ंत कल्पना की है मस्तिष्क के सभी भाग दाएं और बाएं भाग में बाटे गए हैं परंतु पीनियल ग्लैंड मस्तिष्क के बीच में ऐसा कौन सा है भाग है जहां पर अवस्थित है इसको वह निर्धारित नहीं कर पाते हैं ।

अतः डेकार्ट अपनी इस सिद्धांत मन और शरीर के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं जिससे वे आलोचना के शिकार होते हैं, इस सिद्धांत के विरुद्ध दिये गये आलोचनाओं में से निम्नलिखित प्रमुख हैं : -

आत्मा को आध्यात्मिक माना गया है किंतु पीनियल ग्लैंड भौतिक है अध्यात्मिक आत्मा के वास् के लिए पीनियल ग्लैंड जैसी भौतिक वस्तु का मानना आवश्यक नहीं है।

डेकार्ट ने मूल सत्ता का मन और शरीर में कृत्रिम विभाजन कर दिया है इस प्रकार व्यक्ति को शरीर और मन में विभक्त करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है अतः डेकार्ट के समक्ष भी विस्तार और विचार इन दोनों सत्ताओं में किस प्रकार संबंध स्थापित हो यह समस्या बनी रहती है ।

वे दार्शनिक जो द्वैतवाद को मानने वाले हैं शरीर तथा मन को समस्या को सुलझाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं क्योंकि जब यह पूर्ण रूप से स्वतंत्र तथा परस्पर विरोधी लक्षणयुक्त हैं तो फिर इनमें संबंध स्थापित नहीं हो सकता ।इस विषय में कोई भी सिद्धांत तब तक संतोषजनक नहीं हो सकता जब तक कि वह किसी तरह के एकतत्ववाद पर ना आ जाए।

कांट ने भी डेकार्ट के चित्त ,अचित्त तथा ईश्वर सम्बन्धी प्रमाणों की खुलकर आलोचना की है।

इस तरह निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि डेकार्ट ने यद्यपि विभिन्न युक्तियों के द्वारा मन और शरीर के सम्बन्ध को विवेचित करने का सफल प्रयास किया है, परन्तु उन्हें पूर्ण सफलता नहीं मिली फिर भी उनके इस सिद्धांत ने दर्शन जगत को एक विवेच्य विषय दे दिया।